

दानियेल की पुस्तक - संख्या एक सौ चौदह

अंतिम पीढ़ी: यहजेकेल की भविष्यवाणी की पूर्ति का खुलासा और 1,44,000 की मुहरबंदी

Jeff Pippenger

2024-03-03

11 सितंबर, 2001 को तीसरे हाय के आगमन का साक्षी रहने वाली पीढ़ी पृथ्वी के इतिहास की अंतिम पीढ़ी है। यहजेकेल का वह खंड, जो इस सत्य की पुष्टि करता है, मिलरवादियों द्वारा दस कुँवारियों के दृष्टांत से, और इसलिए हबक्कुक अध्याय दो से, सीधे जुड़ा हुआ समझा गया था। उस इतिहास में, हबक्कुक अध्याय दो का वह दर्शन, जो 'अब और विलंब नहीं करेगा' और जो 22 अक्टूबर, 1844 को पूरा हुआ, संयुक्त राज्य अमेरिका में शीघ्र आने वाले रविवार के कानून का पूर्वाभास कराता था। परन्तु 'अब और लंबित नहीं किया जाएगा' वाले दर्शन के विषय में यहजेकेल की भविष्यवाणी, एक लाख चवालीस हजार की मुहरबंदी के इतिहास में, जो 11 सितंबर, 2001 को तीसरे हाय के आगमन से आरम्भ हुआ, पूर्णतया पूरी होती है।

और यहोवा का वचन मेरे पास आया: 'मनुष्य के सन्तान, इस्राएल के देश में जो यह कहावत तुम्हारे बीच प्रचलित है वह क्या है, कि, "दिन लम्बे होते जाते हैं, और हर एक दर्शन निष्फल होता है"?' इसलिए उनसे कहना, 'प्रभु यहोवा यों कहता है: मैं इस कहावत का अंत कर दूँगा, और वे इसे इस्राएल में फिर कभी कहावत के रूप में प्रयोग नहीं करेंगे; पर उनसे कहना, "दिन निकट आ गए हैं, और हर एक दर्शन की सिद्धि।"' क्योंकि इस्राएल के घराने में अब न कोई व्यर्थ दर्शन होगा और न चापलूसी से की जाने वाली भविष्यवाणी। क्योंकि मैं यहोवा हूँ: मैं बोलूँगा, और जो वचन मैं बोलूँगा वह पूरा होगा; वह अब और टाला नहीं जाएगा; क्योंकि हे विद्रोही घराने, तुम्हारे ही दिनों में मैं वचन कहूँगा और उसे पूरा करूँगा,' यह प्रभु यहोवा की वाणी है। फिर यहोवा का वचन मेरे पास आया, कि, 'मनुष्य के सन्तान, देख, इस्राएल के घराने के लोग कहते हैं, "जो दर्शन वह देखता है वह बहुत दिनों के लिए है, और वह दूर के समयों के विषय में भविष्यवाणी करता है।"' इसलिए उनसे कहना, 'प्रभु यहोवा यों कहता है: मेरे किसी भी वचन को अब और टाला नहीं जाएगा, पर जो वचन मैं बोल चुका हूँ, वही किया जाएगा,' यह प्रभु यहोवा की वाणी है। यहजेकेल 12:21-28.

सभी भविष्यद्वक्ता अंतिम दिनों की बात करते हैं, और "इस्राएल के घराने के भीतर" की "व्यर्थ दर्शन" और "मन-लुभाने वाली भविष्योक्तियाँ" नकली "पश्चात् वर्षा" हैं, यानी "शान्ति और सुरक्षा" का संदेश, जो यह तर्क देता है कि "जो दर्शन वह देखता है वह बहुत दिनों के बाद के लिये है, और वह दूर के समयों के विषय में भविष्यवाणी करता है।" यह हबक्कुक का "विवाद" है, क्योंकि जो लोग "व्यर्थ दर्शन" प्रस्तुत करते हैं, वे "जो दर्शन वह देखता है" के विरुद्ध तर्क करते हैं। वे दावा करते हैं कि "जो दर्शन वह देखता है वह बहुत दिनों के बाद के लिये है, और वह दूर के समयों के विषय में भविष्यवाणी करता है।" "शान्ति और सुरक्षा" के संदेश के दूत कहते हैं, "दिन लम्बे हो गए हैं, और हर दर्शन निष्फल होता है," आखिर क्या उसने 18 जुलाई, 2020 की भविष्यवाणी नहीं की थी? "व्यर्थ दर्शन" के दूतों की पहचान भी यहजेकेल ने अध्याय की पहली दो आयतों में की है।

फिर यहोवा का वचन मुझ से यूँ हुआ: हे मनुष्य के पुत्र, तू एक विद्रोही घराने के बीच रहता है; उनके पास देखने को आँखें हैं, पर वे देखते नहीं; सुनने को कान हैं, पर वे सुनते नहीं; क्योंकि वे एक विद्रोही घराना हैं। यहजेकेल 12:1, 2.

सभी भविष्यद्वक्ता परस्पर सहमत हैं, और सभी अंतिम दिनों के बारे में बोलते हैं, और जब मसीह ने अपनी सेवकाई के इतिहास में कुतर्की यहूदियों को संबोधित किया, तो उन्होंने यशायाह का उद्धरण देकर उन कुतर्की यहूदियों की पहचान की जो उस समय परमेश्वर से अलग किए जा रहे थे, कि उनके पास देखने को आँखें हैं, फिर भी देखते नहीं, और सुनने को कान हैं, फिर भी सुनते नहीं। अब भी, जैसे तब, यहजेकेल लाओदीकियाई एडवेंटवाद के उपहास करने वाले लोगों—हमारे समय के कुतर्की यहूदियों—को संबोधित कर रहा है, जो अन्तिम वर्षा के संदेश के विरोध में शान्ति

और सुरक्षा का संदेश प्रस्तुत करते हैं। यीशु उन नियमों के अधीन थे जिन्हें उन्होंने अपने वचन में स्थापित किया, इसलिए उनकी भविष्यवाणियाँ उन दिनों की अपेक्षा, जब उन्होंने कुतर्की यहूदियों को संबोधित किया था, अंतिम दिनों को और भी विशिष्ट रूप से संबोधित करती हैं।

इसलिए मैं उनसे दृष्टान्तों में बात करता हूँ, क्योंकि वे देखते हुए भी नहीं देखते, और सुनते हुए भी नहीं सुनते, और न ही समझते हैं। और उनके विषय में यशायाह की यह भविष्यवाणी पूरी होती है, जो कहती है, 'तुम सुनते-सुनते सुनोगे, पर समझोगे नहीं; और देखते-देखते देखोगे, पर पहचानोगे नहीं।' क्योंकि इस लोगों का हृदय भारी हो गया है, और उनके कान सुस्त हो गए हैं, और अपनी आँखें उन्होंने बंद कर ली हैं; कहीं ऐसा न हो कि वे अपनी आँखों से देखें और अपने कानों से सुनें, और अपने हृदय से समझें, और मन फिराएँ, और मैं उन्हें चंगा करूँ। पर तुम्हारी आँखें धन्य हैं, क्योंकि वे देखती हैं; और तुम्हारे कान धन्य हैं, क्योंकि वे सुनते हैं। क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूँ, बहुत-से भविष्यद्वक्ताओं और धर्मियों ने वे बातें देखने की इच्छा की जिन्हें तुम देखते हो, पर उन्हें न देखा; और वे बातें सुनने की इच्छा की जिन्हें तुम सुनते हो, पर उन्हें न सुना। मत्ती 13:13-17.

जो लोग सुनते हैं, फिर भी नहीं सुनते, और देखते हैं, परन्तु नहीं देखते—ऐसी परिघटना परमेश्वर की उस पूर्व प्रजा का लक्षण है, जिसे अब एक ओर किया जा रहा है। वह भविष्यसूचक परिघटना ऐसी स्थिति के विषय में यशायाह की भविष्यवाणी की पूर्ति है। अन्य सभी भविष्यद्वक्ताओं की तरह, यशायाह भी मसीह के साथ अंतिम दिनों के बारे में बोल रहे हैं।

जिस वर्ष राजा उज्जिय्याह की मृत्यु हुई, मैंने प्रभु को ऊँचा और उठाया हुआ सिंहासन पर बैठे देखा, और उसके वस्त्र का घेरा मंदिर को भर रहा था। उसके ऊपर सेराफ़िम खड़े थे; प्रत्येक के छह पंख थे: दो से वह अपना मुख ढाँपता था, दो से अपने पाँव ढाँपता था, और दो से उड़ता था। और वे एक-दूसरे से पुकारकर कहते थे, "पवित्र, पवित्र, पवित्र है सेनाओं का प्रभु; सारी पृथ्वी उसकी महिमा से परिपूर्ण है।" जो पुकारता था उसकी आवाज़ से द्वार की चौखटों के आधार हिल गए, और घर धुँएँ से भर गया। तब मैंने कहा, "हाय मुझ पर! क्योंकि मैं नाश हो गया हूँ; क्योंकि मैं अशुद्ध होंठों वाला मनुष्य हूँ, और अशुद्ध होंठों वाले लोगों के बीच रहता हूँ; क्योंकि मेरी आँखों ने राजा, सेनाओं के प्रभु को देखा है।" तब सेराफ़िमों में से एक मेरे पास उड़ा, उसके हाथ में एक जलता हुआ अंगारा था, जो उसने वेदी पर से चिमटे से लिया था; और उसने उसे मेरे होंठों पर लगाया, और कहा, "देख, यह तेरे होंठों को छू गया है; तेरा अधर्म दूर हो गया, और तेरा पाप शुद्ध कर दिया गया।" फिर मैंने प्रभु की यह वाणी सुनी, "मैं किसे भेजूँ, और हमारे लिये कौन जाएगा?" तब मैंने कहा, "मैं यहाँ हूँ; मुझे भेज।" उसने कहा, "जा, और इस लोगों से कह: सुनते रहो, पर समझो नहीं; देखते रहो, पर पहचानो नहीं। इस लोगों के मन को मोटा कर, उनके कान भारी कर, और उनकी आँखें मूँद दे; ऐसा न हो कि वे अपनी आँखों से देखें, अपने कानों से सुनें, अपने मन से समझें, और फिरें, और चंगे किए जाएँ।" यशायाह 6:1-10.

यशायाह, यहजकेल और मसीह, सभी, उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो अन्तिम दिनों में, अंतिम वर्षा के दौरान, मुहरबंद किए जा रहे हैं, जब अंतिम वर्षा के सच्चे और झूठे संदेश पर बहस हो रही है—और यह सब हबक्कुक अध्याय दो की पूर्ति में है। यीशु के अनुसार, जिस समय यह पूरा होता है, उस समय धर्मी "दृष्टान्तों" को "देख" रहे होते हैं, जो भविष्यवाणी के प्रतीक हैं। "बुद्धिमान" अंतिम वर्षा के भविष्यसूचक संदेश को समझ रहे हैं, परन्तु जिनका प्रतिनिधित्व तर्क-वितर्क करने वाले यहूदियों से होता है, वे न देखते हैं न सुनते; और यहजकेल के अनुसार वे "शान्ति और सुरक्षा" का संदेश प्रस्तुत करते हैं, यह तर्क देते हुए कि भविष्यवाणियों की पूर्ति बहुत दूर भविष्य में है। वे भविष्यवाणियों का इन्कार नहीं करते; तर्क-वितर्क करने वाले यहूदियों ने आने वाले मसीहा की भविष्यवाणी का जुबानी समर्थन तो किया, पर उन्होंने उस घटना को बस दूर के भविष्य में ठेल दिया। फिर भी, यीशु ने उन्हें धन्य कहा जो अपने समय के भविष्यसूचक संदेश को "देखेंगे"।

मसीह के दिनों में यह वही संदेश था जो उनके बपतिस्मा के समय आया, जब पवित्र आत्मा उतरा। उनके बपतिस्मा पर पवित्र आत्मा का उतरना 11 अगस्त, 1840 को प्रकाशितवाक्य अध्याय 10 के स्वर्गदूत के उतरने का पूर्वचित्र था। इन दोनों इतिहासों में हुआ दिव्य अवतरण उस युग के वर्तमान सत्य के संदेश के आगमन का चिह्न था; यीशु के लिए

यह उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान का संदेश था, जैसा कि उनके बपतिस्मा द्वारा प्रतीकित किया गया था। मिलरवादियों के लिए, यह पहले और दूसरे 'हाय' से संबंधित इस्लाम का संदेश था, जिसने समय-भविष्यवाणी के परीक्षात्मक संदेश की पुष्टि की। ये दोनों इतिहास 11 सितंबर, 2001 को अन्तिम वर्षा के परीक्षात्मक संदेश के आगमन के साथ मेल खाते हैं। इसी कारण सिस्टर व्हाइट निम्नलिखित दर्ज करती हैं:

"1840-1844 के मध्य दिए गए समस्त संदेशों को अब प्रभावशाली बनाया जाना है, क्योंकि बहुत से लोगों ने अपना मार्गबोध खो दिया है। ये संदेश सभी कलीसियाओं तक पहुँचे।"

"मसीह ने कहा, 'धन्य हैं तुम्हारी आंखें, क्योंकि वे देखती हैं; और तुम्हारे कान, क्योंकि वे सुनते हैं। क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, कि बहुत से भविष्यद्वक्ताओं और धर्मी जनों ने उन बातों को देखने की अभिलाषा की, जिन्हें तुम देखते हो, और नहीं देखा; और उन बातों को सुनने की, जिन्हें तुम सुनते हो, और नहीं सुना' [Matthew 13:16, 17]। धन्य हैं वे आंखें जिन्होंने 1843 और 1844 में देखी गई बातों को देखा।"

संदेश दिया गया था। और संदेश को दोहराने में कोई विलंब नहीं होना चाहिए, क्योंकि समय के चिन्ह पूरे हो रहे हैं; अंतिम कार्य पूरा किया जाना चाहिए। थोड़े समय में एक महान कार्य किया जाएगा। परमेश्वर की नियुक्ति से शीघ्र ही एक संदेश दिया जाएगा जो बढ़कर प्रबल पुकार बन जाएगा। तब दानिय्येल अपनी गवाही देने के लिए अपने भाग में खड़ा होगा।

हमारी कलीसियाओं का ध्यान जागृत किया जाना चाहिए। हम संसार के इतिहास की सबसे बड़ी घटना की दहलीज़ पर खड़े हैं, और शैतान को परमेश्वर के लोगों पर ऐसा अधिकार न मिले कि वह उन्हें सोए ही रहने दे। पोपतंत्र अपनी शक्ति में प्रकट होगा। अब सभी को जागना और पवित्रशास्त्र की छानबीन करना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर अपने विश्वासयोग्य जनों को यह प्रकट करेगा कि अंतिम समय में क्या होगा। प्रभु का वचन सामर्थ्य सहित उसके लोगों के पास आने वाला है। . . .

"यह मुझे दिखाया गया है—कि हम सोए हुए हैं, और अपनी मुलाक़ात के समय को नहीं जानते। परन्तु यदि हम परमेश्वर के सामने अपने आप को नम्र करें, और पूरे हृदय से उसे खोजें, तो वह हमें मिल जाएगा।" मैन्युस्क्रिप्ट रिलीज़ेस, खंड 21, 436-438.

वह संदेश, जिसका प्रतिरूप मसीह के इतिहास में मसीहा के वर्तमान सत्य के संदेश और 1840 से 1844 के वर्तमान सत्य के संदेश द्वारा प्रस्तुत किया गया है, अंतिम दिनों की ओर संकेत करता है, जब मिलेराइट संदेश दोहराया जाएगा। जो इतिहासों में 'देखने और सुनने' में असमर्थ के रूप में दर्शाए गए हैं, वे 'अपनी मुलाक़ात के समय' को नहीं जानते। जब यशायाह 'अंतिम वर्षा' के नकली संदेश के दूतों का पहला संदर्भ प्रस्तुत करता है—जो देखते हैं, परन्तु नहीं देखते—तो वह उस समय को चिन्हित करता है जब यह अवधि प्रारम्भ होती है; वही अवधि जिसके बारे में बहन व्हाइट ने कहा, "ईश्वर की नियुक्ति का एक संदेश जो बढ़कर 'ऊँची पुकार' बन जाएगा।" 'ईश्वर की नियुक्ति' उस विशिष्ट समय का प्रतिनिधित्व करती है जब वह संदेश आएगा, और यशायाह अध्याय छह की तीसरी आयत में, यशायाह उस समय को सटीक रूप से इंगित करता है।

और एक ने दूसरे से पुकारकर कहा: पवित्र, पवित्र, पवित्र है सेनाओं का प्रभु; सारी पृथ्वी उसकी महिमा से परिपूर्ण है। यशायाह 6:3.

सिस्टर वाइट बताती हैं कि जब स्वर्गदूत एक-दूसरे से "पवित्र, पवित्र, पवित्र" पुकारते हैं—यशायाह के उस अंश में जहाँ वह उन लोगों का वर्णन करता है जिनकी आँखें हैं, जो देखते हैं, पर देख नहीं पाते—तो उसकी पूर्ति 11 सितंबर, 2001 को होती है।

जैसे वे [स्वर्गदूत] भविष्य को देखते हैं, जब समस्त पृथ्वी उसकी महिमा से भर जाएगी, तो विजयी स्तुति-गीत मधुर गान में एक से दूसरे तक प्रतिध्वनित होता है: 'पवित्र, पवित्र, पवित्र, सेनाओं का प्रभु है।' वे परमेश्वर की महिमा करने में पूर्णतः संतुष्ट हैं; और उसकी उपस्थिति में, उसकी स्वीकृति की मुस्कान के तले, उन्हें इससे बढ़कर

कुछ भी नहीं चाहिए। उसकी छवि को धारण करने में, उसकी सेवा करने और उसकी आराधना करने में, उनकी सर्वोच्च आकांक्षा पूर्णतः पूरी हो जाती है। रिच्यू एंड हेराल्ड, 22 दिसंबर, 1896.

11 सितम्बर 2001 को एक लाख चवालीस हज़ार की मुहरबंदी आरंभ हुई, और अंतिम वर्षा की फुहारें पड़ने लगीं, और जब दस कुँवारियों का दृष्टांत दोहराया जा रहा था, तब हबक्कुक का विवाद आरंभ हुआ। उसी समय यहजेकेल की भविष्यवाणी अपनी पूर्ण पूर्ति को प्राप्त हुई। भविष्यवाणी का वचन अब और विलंबित नहीं होगा, और 11 सितम्बर 2001 का साक्षी बनी पीढ़ी पृथ्वी ग्रह की अंतिम पीढ़ी है, क्योंकि एडवेंटवाद के अंत की दृष्टि मसीह के दूसरे आगमन पर अनुग्रहकाल के समाप्त होने की घोषणा करती है। इस तथ्य की दूसरी गवाही लूका की पुस्तक, अध्याय इक्कीस में मिलती है।

मैं तुम से सच कहता हूँ, जब तक ये सब बातें पूरी न हो जाएँ, तब तक यह पीढ़ी समाप्त नहीं होगी। आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरे वचन कभी न टलेंगे। लूका 21:32, 33.

लूका के इक्कीसवें अध्याय में यीशु पृथ्वी के इतिहास की अंतिम पीढ़ी की पहचान करते हैं। वे अभी-अभी वर्ष 70 में यरूशलेम के विनाश से लेकर मिलराइट इतिहास तक के क्रमिक इतिहास की एक रूपरेखा प्रस्तुत कर चुके हैं। इसके बाद वे भविष्यसूचक इतिहास की सीधी पहचान से हटकर एक दृष्टांत प्रस्तुत करते हैं, जो उसी भविष्यसूचक इतिहास को दोहराता और उसका विस्तार करता है जिसे उन्होंने प्रस्तुत किया था। इस प्रकार उन्होंने उसी वृत्तांत के दो आंतरिक साक्षी प्रदान किए, और अंत में यह बताते हुए निष्कर्ष निकाला कि जिन घटनाओं की “पीढ़ी” साक्षी बनेगी वह उनके पुनरागमन तक जीवित रहेगी; इस प्रकार संदर्भतः उस पीढ़ी की पहचान हुई जिसका प्रतिनिधित्व एक लाख चवालीस हज़ार करते हैं।

एक लाख चवालीस हज़ार के सील किए जाने का इतिहास अंतिम पीढ़ी है, और वे मृत्यु का स्वाद नहीं चखते, यद्यपि वे उस समय में जीते हैं जब आकाश और पृथ्वी नष्ट हो जाते हैं।

परन्तु प्रभु का दिन रात में चोर की तरह आएगा; उस दिन आकाश बड़े शोर के साथ विलीन हो जाएगा, और तत्व प्रचंड ताप से पिघल जाएंगे; और पृथ्वी तथा उस पर किए गए सब काम जलकर भस्म हो जाएंगे। जबकि ये सब चीज़ें इस प्रकार नष्ट होने वाली हैं, तो तुम्हें पवित्र चाल-चलन और भक्ति में किस प्रकार के लोग होना चाहिए—परमेश्वर के दिन के आने की प्रतीक्षा करते हुए और उसके शीघ्र आगमन की ओर तत्पर रहते हुए—जिस दिन आकाश आग से जलकर विलीन हो जाएगा, और तत्व प्रचंड ताप से पिघल जाएंगे? 2 पतरस 3:10-12.

मसीह का दूसरा आगमन मसीह के रूपान्तरण में दर्शाया गया था।

रूपान्तरण के पर्वत पर मूसा मसीह की पाप और मृत्यु पर विजय के साक्षी थे। वह उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते थे जो धर्मियों के पुनरुत्थान के समय कब्र से निकलेंगे। एलियाह, जिसे मृत्यु देखे बिना स्वर्ग में उठा लिया गया था, उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता था जो मसीह के दूसरे आगमन के समय पृथ्वी पर जीवित होंगे, और जो ‘एक क्षण में, पलक झपकते ही, अंतिम तुरही पर, बदल दिए जाएंगे;’ जब ‘यह नश्वर अमरता को धारण करेगा,’ और ‘यह नाशवान अविनश्वरता को धारण करेगा।’ 1 कुरिन्थियों 15:51-53। यीशु स्वर्ग के प्रकाश से आच्छादित थे, जैसा वह तब दिखाई देंगे जब वह ‘दूसरी बार पाप के बिना, उद्धार के लिए’ आएंगे। क्योंकि वह ‘अपने पिता की महिमा में पवित्र स्वर्गदूतों के साथ’ आएंगे। इब्रानियों 9:28; मरकुस 8:38। उद्धारकर्ता का चेलों से किया हुआ वचन अब पूरा हुआ। पर्वत पर भविष्य की महिमा के राज्य का लघुरूप में प्रस्तुतीकरण हुआ—मसीह राजा के रूप में, मूसा पुनरुत्थित संतों के प्रतिनिधि के रूप में, और एलियाह उठा लिए गए लोगों के प्रतिनिधि के रूप में। युगों की अभिलाषा, 421.

एलियाह, जो नहीं मरे, उन एक लाख चवालीस हज़ार का प्रतिनिधित्व करते हैं जो नहीं मरते, और मूसा उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो मरते हैं। अंतिम दिनों में ये दोनों वर्ग प्रकाशितवाक्य अध्याय सात में ‘एक लाख चवालीस हज़ार’ और ‘एक बड़ी भीड़’ के रूप में दर्शाए गए हैं। जब प्रकाशितवाक्य अध्याय छह में पाँचवीं मुहर खोली जाती है,

तब अंधकार युग के दौरान पोपतंत्र द्वारा जिनकी हत्या की गई थी, उन्हें श्वेत वस्त्र दिए जाते हैं।

'और जब उसने पाँचवीं मुहर खोली, तो मैंने वेदी के नीचे उन लोगों की आत्माएँ देखीं जो परमेश्वर के वचन के कारण और उस गवाही के कारण जो उनके पास थी, मार डाले गए थे: और वे ऊँची आवाज़ से पुकार कर कह रहे थे, हे प्रभु, पवित्र और सच्चे, कब तक तू पृथ्वी पर रहने वालों का न्याय नहीं करता और हमारे लहू का बदला उनसे नहीं लेता? और उनमें से प्रत्येक को श्वेत वस्त्र दिए गए [उन्हें शुद्ध और पवित्र ठहराया गया]; और उनसे कहा गया कि वे थोड़े समय तक और विश्राम करें, जब तक उनके सहदास और उनके भाई भी, जो उनकी ही तरह मारे जाने वाले थे, पूरा न हो जाए' [प्रकाशितवाक्य 6:9-11]. यहाँ यूहन्ना के सामने ऐसे दृश्य प्रस्तुत किए गए थे जो उस समय वास्तविकता में नहीं थे, पर जो भविष्य के किसी काल में होने वाले थे। पांडुलिपि प्रकाशन, खंड 20, 197.

शहीद पूछ रहे हैं कि परमेश्वर उनकी हत्या का प्रतिशोध कब लेगा। एक शहीद मारे जाने से पहले ही यीशु का विश्वास रखता था, क्योंकि उसी विश्वास की अभिव्यक्ति ने पापाई सत्ता को उसे मार डालने के लिए प्रेरित किया। श्वेत वस्त्र मसीह की धार्मिकता का प्रतीक हैं, लेकिन जिन आत्माओं की हत्या की गई थी, उन्हें जो श्वेत वस्त्र दिए गए, वे उन्हें उनकी शहादत के बाद दिए गए थे। ये वस्त्र शहादत के प्रतीक हैं, केवल मसीह की धार्मिकता के नहीं। एक शहीद के पास मारे जाने से पहले ही मसीह की धार्मिकता का वस्त्र होता है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 7 में बहुत बड़ी भीड़ को श्वेत वस्त्र दिए जाते हैं, इस प्रकार वे आने वाले रविवार कानून के रक्तपात के दौरान मरनेवालों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस प्रकार एक लाख चवालीस हज़ार का प्रतिनिधित्व एलियाह करता है, और जो प्रभु में विश्वासयोग्य होकर मरते हैं, उनका प्रतिनिधित्व रूपांतरण के पर्वत पर मूसा करता है।

एक लाख चवालीस हज़ार वही पीढ़ी हैं जो नहीं मरती, और वे वही पीढ़ी हैं जिनका उल्लेख मसीह लूका अध्याय इक्कीस में करते हैं, जो तब जीवित होगी जब स्वर्ग और पृथ्वी टल जाएंगे।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

हाबिल की हत्या उस वैर का पहला उदाहरण थी, जिसके विषय में परमेश्वर ने घोषित किया था कि वह सर्प और स्त्री के वंश के बीच—अर्थात् शैतान और उसके अधीन लोगों तथा मसीह और उनके अनुयायियों के बीच—विद्यमान रहेगा। मनुष्य के पाप के कारण शैतान ने मानव जाति पर अधिकार पा लिया था, परन्तु मसीह उन्हें उसका जुआ उतार फेंकने में सक्षम करेंगे। जब-जब कोई आत्मा परमेश्वर के मेम्ने पर विश्वास के द्वारा पाप की सेवा का त्याग करती है, शैतान का कोप भड़क उठता है। हाबिल का पवित्र जीवन शैतान के इस दावे के विरुद्ध साक्षी था कि मनुष्य के लिए परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करना असंभव है। जब कैन, दुष्ट की आत्मा से प्रेरित होकर, यह देखकर कि वह हाबिल पर नियंत्रण नहीं कर सकता, इतना क्रुद्ध हुआ कि उसने उसकी जान ले ली। और जहाँ कहीं भी ऐसे लोग होंगे जो परमेश्वर की व्यवस्था की धार्मिकता का समर्थन करने के लिए खड़े होंगे, उनके विरुद्ध वही आत्मा प्रकट होगी। यही वह आत्मा है जिसने युगों-युगों से मसीह के चेलों के लिए खूँटा खड़ा किया और जलती चिताएँ प्रज्वलित की हैं। परन्तु यीशु के अनुयायी पर ढाई गई क्रूरताएँ शैतान और उसकी सेनाओं के उकसावे से होती हैं, क्योंकि वे उसे अपने नियंत्रण के अधीन होने के लिए बाध्य नहीं कर सकते। यह पराजित शत्रु का क्रोध है। यीशु का प्रत्येक शहीद विजयी होकर मरा है। भविष्यद्वक्ता कहता है, 'उन्होंने उसे [उस पुराने सर्प को, जिसे दुष्ट और शैतान कहा जाता है] मेम्ने के लहू से और अपनी गवाही के वचन के द्वारा जीत लिया; और उन्होंने मृत्यु तक भी अपने प्राणों से प्रेम नहीं किया।' प्रकाशितवाक्य 12:11, 9। पितृपुरुष और भविष्यद्वक्ता, 77।